



जीवन के 365 सबक

रघुवेन्द्र रमण अरोड़ा



जीवन के 365 सबक

रघुवेन्द्र रमण अरोड़ा

आपने इस पुस्तक को खरीदने का निर्णय लिया,
सर्वप्रथम आप के चुनाव के लिए धन्यवाद एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

इस पुस्तक में मैंने व्यावहारिक पहलुओं की बारीकियों का विश्लेषण करने की कोशिश की है और यह मेरे अनुभव पर आधारित पुस्तक है। मैं चाहता हूं कि पाठक इसे पढ़ें और इसके माध्यम से अपने ज्ञान में वृद्धि करके सफलता पाएं।

मैंने इस में जिंदगी के हर पहलू पर प्रकाश डालने वाले प्रेरणास्पद वाक्यों एवं उद्धरणों को संकलित किया है।

चुनौतियों से लेकर असफलता और मानसिक अवसाद से लड़ने और बिज़नेस और आम जिंदगी में

आगे बढ़ने और सफलता पाने के लिए ये एक प्रेरक की भूमिका निभाएंगे. हर दिन के लिए एक

प्रेरणस्पद वाक्या आपकी पूरी जिंदगी बदलने और उसे एक नयी दिशा देने में कामयाब होगा ऐसी मेरी

अपेक्षा है.

मेरा यह विश्वास है, कि चूंकि मेरी यह पुस्तक खरे अनुभवों पर आधारित है और इसमें सटीक और अनुभव पर आधारित बातें कोट्स रूप में लिखी गई है इसलिए वे, जो जिंदगी में कुछ कर गुजरना चाहते हैं और चुनौतियों का सामना नए विश्वास, नयी सोच के साथ करना चाहते हैं अवश्य ही इसे पढ़ कर लाभान्वित होंगे और उनके भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा।

यही वक्त है खुद को प्रोत्साहित करने का और खुद को ऊर्जा और उमंग से भरने का। आप, अब अपनी जिंदगी में सक्रिय हो जाने के लिए तैयार हो जाइए। अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए कमर कस लीजिए। अपने सपनों को साकार कर लीजिए। किसी दूसरे दिन का इंतजार मत कीजिए और आज ही सफलता पा लीजिए।

मैं अपनी यह पुस्तक स्वर्गीय श्री परमानंद गाबा (दादाजी), स्वर्गीय शान्ति देवी (दादी जी), स्वर्गीय श्रीमती अनुराधा रानी अरोड़ा (माता जी), एवं अपने पिताजी स्वर्गीय श्री निरंजन दास अरोड़ा एवं स्वर्गीय शैलेंद्र शंकर अरोड़ा(बड़े भाई) को समर्पित करता हूं। इन सब की बदौलत ही मैं जो कुछ भी कर पा रहा हूं, वह कर पा रहा हूं। ये सभी मेरी जिंदगी का एक अटूट हिस्सा हैं और मेरे प्रेरणास्रोत हैं।

सफलता पाने के लिए अग्रिम शुभकामनाएं।

रघुवेंद्र रमण अरोड़ा

जीवन के 365 सबक

अगर आप कल्पना कर सकते हैं, तो उसे हासिल कर सकते हैं और अगर सपना देख सकते हैं तो वैसा बन भी सकते हैं।

वास्तविक जोखिम किसी चीज के लिए भी कोशिश ना करना है।

आप के मौजूदा हालात आपकी असली योग्यता को नहीं दर्शाते।

यदि हम बदलेंगे नहीं, तो हम खुद को कैसे विकसित करेंगे और यदि हम खुद को विकसित ही नहीं करेंगे तो हम क्या जिए।

अपनी कठिन परिस्थितियों में भी खुद को प्रोत्साहित बनाए रखिए। क्योंकि कठिन परिस्थितियों में ही सर्वश्रेष्ठ नतीजे आते हैं।

प्रयास करने छोड़ देना, हमेशा जल्दबाजी ही माना जाएगा।

प्रत्येक सुबह जब आप बिस्तर छोड़ें, तो तीन बार जोर से बोलें हां, मैं कर सकता हूँ। और इस सकारात्मक विचार के साथ हर दिन की शुरुआत करें।

जब आप बेहतरीन की उम्मीद करते हैं, तो आपके मन-मस्तिष्क में भी बेहतरीन करने की तरंगें पैदा होती हैं और आप वाकई सर्वश्रेष्ठ करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

समय सबसे अनमोल है लेकिन हम सबसे ज्यादा इसी की अनदेखी करते हैं। हम समय का दुरुपयोग करते हैं, फालतू कामों में से जाया करते हैं, बजाय इसके कि हम समय में निवेश करें।

सफलता का और प्रयासों का बिल्कुल सीधा सीधा सा रिश्ता है।